

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

ह्या लिखित ग्रंथ संग्रह :-

ग्रंथ क्रम

ग्रंथ नाम



पद्य (१८८)

क काव्ये.

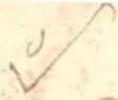
विषय

मराठी काव्य.

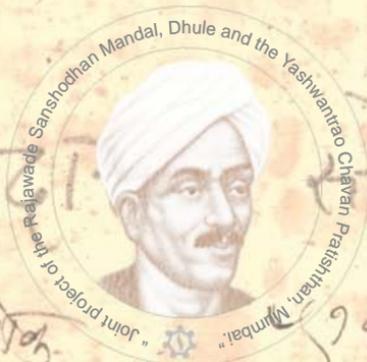
"Joint project of Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

रामदासी
क्र. नं. ४

काल्य
मराठे



रामदासी साहित्य



रामदासी धोडे श्लोक
काव्यग्री

१६/५१८८

तुकाराम, नवग्रह स्तोत्र, राधापती स्तोत्र, माकती स्तोत्र
वाराणसी रुद्राली ३०

नंबर ७ चे बुक

(1)
॥ श्री ॥ लंके हुनि ॥

॥ लंके हुनी अयुद्धे जाता ॥ राम लक्ष्मण
सीता हनुमंते अंजनिमालादाख वि
हीरामा ॥ १ ॥

चवघेके फान कयबोलरघु
वीर ॥ माते कुमरुपकार
केले ॥ २ ॥

माते तुसिय मया हनुमते ज
मलेर न ॥ माझे वटे रामायण या
च्यानी योगे ॥ ३ ॥

सिताशुद्धीयेणे के ली ॥ लक्ष्मणाची
राक्षसी हरली लंका जाळुन निरदाळ
की राक्षससेना ॥ ४ ॥

अमृतवली निवडून ॥ वैद्येकेले रसा

पण॥ लक्ष्मणाला जीवदान दीधले
येणे॥ ५॥

अख घाकुमर वधीला सवेराक्षसाचा
मेळा जंबुमाळी रगडला पाया होतळी
॥ ६ ॥

अट राप घेवां नरभार॥ रामे युद्ध के
ले घोर॥ सिंधू पार सा
या सकेले॥

अहिरावणम॥ चोरुमने
हती असा॥ किरुपदोष जण
सोडविले येणे॥ ७ ॥

एकनिहनु मंताची स्तुती॥ अं जनि
तुळुमानी॥ चिंति॥ व्यथकावार धूप
ती वाघविसी जोसे॥ ८ ॥

रावणकुंभकर्णवधुनी॥ सवेअणि

(2A)

ता घवप, नी ॥ तरिपुभाचा माझे म
नी उरुस होता ॥ १० ॥

हा कामाझे उदरी अरु गभि उ नका
ना ही गळला ॥ अपपु असता श्री
रामा ला कटविले येणे ॥ ११ ॥

माझी सात वरु वडी के काळा
ची न रडी ॥ व पादि कु वा
पूरी घुंगुडी ॥ १२ ॥

असं यगा ॥ दुग्ध धारा सो
डुन दि, श्री शो, उदरी खोचली
श्री खंड पाडा ॥ १३ ॥

वेपि देउ पडला ला अ पु न दार व
वी रामा ला अ जनी ते व्हा ॥
॥ १४ ॥

पदभुताचे ॥

3A7

॥ भुतजबर मोटे गवाई ॥ घा. लि. स
उपज करु मी का ही ग भुतजबर ॥ १ ॥
हिंबुडा किंब को ज्वी उलारा ॥ या
भुताने ला विता या ग भुतजबर ॥

॥ २ ॥

सुपच दुने व ता से या भु
ताने ला विं ग भुतजबर ॥

॥ ३ ॥

ज्योति ज्योति लिं गे रवडा बा जला
भुत भेई ना या चा बा ला ग भुत
जबर ॥ ४ ॥

भुत सउ पी नार दा सी सा ठ पो रे सा
ली या सी ग भुत जबर ॥ ५ ॥ ॥

(4)

भुलझउपी प्रह्लादासी योनेवधि
लेपीती यासी गभुत जबर ॥ ६ ॥

पंटरिचेगभुतगमाटेअरुकाग
ल्यासुउरसेपीनाटगभुतजबर

॥ ७ ॥

भुतभईः पारिपुउलीक
रवेळ्याग जबर ॥ ८ ॥

भुलझउपीथोरथोरसंतासी
लुकाम्हेणपंटरिनाथगभुल

जबर ॥ ९ ॥

लुकाम्हेणदेवजोगभुतजन्मा

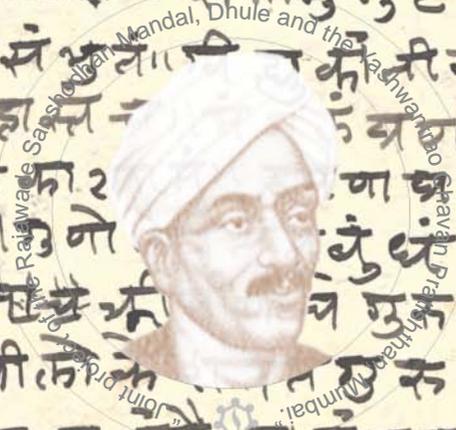
जन्मीलागोगभुतजबर ११०१ समा



(4A)

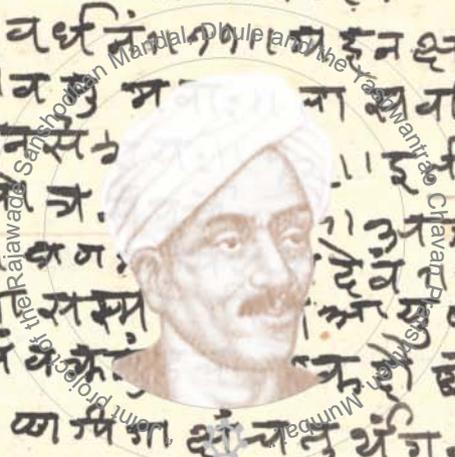
अथ आदित्यादि नवग्रहस्तेजकारंभः
जपाकुसुमकांकाशं॥ काशयेयंमहद्युती॥
लमोरेरुविकापंचं॥ यणतोसिदिवाकरं॥११॥
दधीश्वरःस्तुशाशां॥ क्षीरोदौणिसामिभो॥
नमामिशरीनेसोमंशंभोमुत्तुटभुशनं॥२॥

धरणिगर्भसंभुते॥ विरक्तोनीनमभं॥
कुमारिशक्तीहासि॥ वंशमाभ्यहं॥३॥
भीवंगुकातीका२॥ नाशलीपंबुधं॥
सौम्यसौम्यगुणे॥ गुंथंयणमाभ्यहं॥४॥
हेवाणचमृष्टं॥ येगुणकांचनसंनिभं॥
बुधीभुतेगीको॥ तसुखणमाभ्यहं॥५॥
हेमकुंभमृणाकाभं॥ देवातोचरप्रंशुके॥
सर्वशास्त्रवृत्तानांभागेयंयणमाभ्यहं॥६॥
निकंजनसमाभासं॥ रघुंजयभाशं॥
कायाप्रार्थिसंभुते॥ तनोमाशिशनेरं॥७॥
अथकार्यप्रहाविधिं॥ चद्रादिसमिदितं॥
गर्विकुकाजभसंभुते॥ तंराहुयणमाभ्यहं॥८॥
कलांरघुष्यसंकाशं॥ तारकाग्रहमस्तकं॥



सैं इंसे द्वाप कें घोरं ॥ तनके लुं वृण मा भ्य
हं ॥ ९ इती ब्रासशु रगे जी ले ॥ ये पठ ती
स मा ही ताः ॥ दिवा जाय दिवा रा जौ रि

धू रा ती भ वि व्य ती ॥ न न न न रि नृ वा गे
न ॥ भवेदुः स्वपना शत्रं ॥ वै स्व ध मि तु कं ते षो ॥ मा
रो ग्ये पु ढी वर्ध नं ॥ इ न क्ष त्र ताः पि डा ॥
ल स्का रा गी व सु प्र ता ना ना व वि च रा मं वा ती
ब्रा सो कु ते न से ॥ इ ती आ ही या दि
न न ग द स्ते ज



वारे भः ॥ अ ग ग व ती स्तो त्र
कं भ या वा स स
तं ॥ अ थ मं अ कं
गी ती यं रु षा मि ना क्षं च तु थं ग ल न क कं ॥ तं वे

द रं च न मे च रा हे रि क ठ मे व ना ॥ स ल मं वि धू
रा ले इं धु प्र व र्ण च तु मु लं प्र व र्ण भ क च इ चा ॥
द श मं लु वि ना य कं व का द रं ग व ती ॥ द्वा
द शं लु ग ज्ञान नः ए ता नि द्वा द श ना मा नि ॥
गी सं ध्यं प्रः प ठे नं स्ना न च वि धू भ यं त स्थ

(5A)

सर्वस्य धीकवः प्रभो ॥ २ ॥ विद्या धेनु भवेत् ॥
 विद्या धना ये क भतेषु ग्रां ये क भतेषु ग्रां ॥ मोक्ष
 ये क भतेषु गती नपेत गणपती स्तोत्रं ॥ ३ ॥ इ
 भीरुमात्रै फलं क भतेषु संज हरेण सि धये
 क भतेषु नात्र नै शयः ॥ ४ ॥ अद्या नो ब्राह्मणानां
 च ली ॥ सि लायः समर्पये ॥ तस्य विद्या भवेत्
 स जी गणे शस्य ॥ तस्य विद्या भवेत्
 पुराणे गणपतेर् ॥ इती श्री कार ह
 णसि स्तुती चानं ॥ पुनः ॥ इती चारा
 ॥ सि ध्या वा रा ग भवेत् ॥ नमस्कार च गभा गी रथी
 का ॥ पु छे च क ता ॥ मोक्ष गंगा ॥ नमस्कार
 हो ती ती र्थ शो च य ॥ १ ॥ ॥ श्री वि य ये उ
 नि स्ताने क रि ती ॥ वा हा हो कौ तु के जी त गे ध र्म
 ह ग ती ॥ २ ॥ वि ले ये वि वा य वे ग ॥ नमस्कार हो ती
 ती र्थ न नो च य गा ॥ २ ॥ आ हो प्रा च हा प्र क वा
 का नी ये तो ॥ ने हा तु का फार आ नंद हो तो ॥
 स्य इ धे क सि वा ह गी यु र्ज वे ग ॥ नमः ॥ ३ ॥
 नमो ननु कं ॥ दु री भा नु क न्या ती नु
 नु क न्या मि का न्या स मा न्य ॥ ती र्थी मि को
 नी वा ह ती यु र्ज वे ग नमस्कार ॥ ४ ॥



Digitized by eGangotri
 The Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai, India
 www.yashwantrao.org

(6A)

लुझे स्ना न प्रा जे देह दिव वा ली ॥
महदास हा ध्या स न मा शु गंगा नमः ॥ ११ ॥
ई ती भा गिर जी जे का सना दः ॥ -



॥ श्री ॥

(7)

श्री गणेशाय नमः
मातु ली स्तोत्र चारु भः

अंजनि ग भसिं भुले ॥ जायुषु जोम हाबकः ॥
 कुमारी ब्रह्म-पारि-य ॥ नये हा नुमतेनमः ॥ १ ॥
 सुंदरानना पिंगले ॥ ता ॥ सुभंजनि धरंज
 ना ॥ भुतासुया ॥ ता ॥ हृदया निधेश
 वायुनदना ॥ २ ॥ ना निव्य चंदना ॥ गुण
 जेदना वा विबंदन ॥ दर्पण लुजनादिना ॥
 हेदुयाः ॥ ३ ॥ भ ॥ ता देव दुर्कभर जीवजीव
 नाशिल सुकभा ॥ ना दे ॥ शि भावना ॥ ४ ॥
 राम-चोरि कै शामही ल धी धाय लाये रे मातु ली
 बकी ॥ सोदु चिखरे जग लक्ष्मी जना ॥ ५ ॥
 जोह काऊ जी स्या मी लोरणी ॥ द्राण अणु नि उ
 ठवि कणी ॥ कि ली घोष हा ठा उ का ज नाह
 ॥ ६ ॥ रंगको मदे काम कदि मि ॥ नाक रि लु ह्री म की
 स्यसमी ॥ नात का परि मि कृ पाधना ॥ ७ ॥ ७ ॥



सिध वाट जो अंतरि सदाद्या न रे लरे नारि आवट
तल जि ब हु शौ ल नि म ना ॥ हे ह या नि धे वा ॥ ८ ॥

स हुरु सु रे ग सु ल पु रि के ॥ बा ज गे लु का जा ग नि व
चि ले ॥ सा ज लु वृ जे वा च ना ॥ हे ह या नि धे वा पु ॥ ९ ॥

जी म आ ह क वा चि ना न रु आ श्र इ ल मा भी र
दे व रु ॥ सा क्ष बा व की स च वा स ना ॥ हे ह ॥ १० ॥

इ ती रा म वा म क गी नी प्र अ ष्य क सो न
सं पु रं ॥ १ ॥ आ दो ॥ न दि ग म नं ड ता म ग ॥

कां च नं ॥ वै दे जी ह म र व ॥ सु ग्री सं भ
रा जे वा की वि ट क उ ब ल र गे कं का पु रि

द ह नं च ज्य त र ॥ उ भ क ण आ न नं ये ल
य वा मा य नं ॥ १ ॥ अ दो दे व की ल भ जं जो गी

ग हे व ध नं प्रा या पु ल न जी यि ता च हा र नं गे
व ध नो धा र नं को स चे ह नं की र वा दि इ र व

को ती सु त वा क नं रे ल ल भा ग व ल पु र
ण कं थी लं श्री कु षा जी का मृ तं ॥ सु पु रं

म स्तु ॥ २ ॥



Joint Project of
Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and
Jashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(9)





मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com